75 Years of 1 Central Base Post Office

The saga of 1 CBPO (56 APO) began in 1947 when troops were sent to maintain law & order at the east Punjab border and to help in refugee management, the need for an exclusive postal arrangement was felt by the Army. 56 APO came back from Iwakuni, Japan, in 1947 after WWII, it formed the nucleus of what later came to be known as 1 Central Base Post Office (CBPO) and started to function at New Delhi.

1 CBPO acts as the head post office and hub of postal and SDS mail for 259 FPOs/SDOs spread out in Northern, Western, South-Western, Central and Southern Commands. The unit also ensures base censorship. It also serves paramilitary forces acting under the operational control of Army deployed in the Northern and Western borders. It provides service to all the Air Commands except Eastern Air Command and all Naval Commands. It serves the Indian contingents in UN Peace Keeping Forces through five Foreign FPOs.

On 24th Oct 1947, the APO started functioning as the base sorting office, with the designation of New Delhi 56 APO. All FPOs operating in Punjab and J & K were based on it for receipt and despatch of mails as well as maintenance of postal accounts. In early 1948, the prefix "New Delhi" was dropped and it became 56 Base Post Office. The coded address "C/O 56 APO" also came to be used as the security form of address for the troops deployed in sensitive areas and it worked as the nodal point for receipt and dispatch of mails.

In May 1960, the 56 Base Post Office, was renamed as 1 Central Base Post Office when another Central Base Post Office was opened at Calcutta to provide base postal cover to the FPOs of Eastern Command. 1 CBPO shifted to its own Key Location Plan accommodation at Rao Tula Ram Marg in Feb 1977 in an area of forty-eight acres. Army HQ SDS Unit was merged with 1CBPO on 01 Feb 1987. 1 Postal Tracing Section merged into 1 CBPO in Sep 1973. From 01 Jan 1989, this section has been renamed as Returned Letter Office (RLO). The Philatelic Bureau started functioning as part of the CBPO from 18 July 1970.

The 1 CBPO took the responsibility of supplying Newspapers and periodicals to the troops serving in J & K through FPOs wef 01 Nov 1966 on a no profit no loss basis. From 01 Apr 1967, this facility was also extended to the troops of Eastern Command.

To maintain the confidentiality of locations of Units, security form of address is used. Units and stations are identified with unique pincodes. In the pincode system of India Post, PIN block "9" is allocated for APS. The keystone of this system of operation is 56 APO/ 1 CBPO.

During the outbreak of COVID-19 pandemic when restrictions were imposed throughout the country, regular flow of mail communication was maintained by 1 CBPO by implementing mail contingency plan after adhering to all precautionary measures. All endeavours have been made by 1 CBPO being hub of mail operation in Army by exploring all options while adhering to guidelines issued by formation Headquarters (Army) in connection with the pandemic.

Consequent upon stoppage of air and rail services, the only mode left for transmission of mail was road network (only a few Cargo flights and Parcel trains were operating). Mail Contingency Plan activated by 1 CBPO for detailment of Army vehicles and couriers as an essential duty for exchange of mail bags with nodal Field Post Offices. The services of Blue Dart Cargo flights / Air India / Private Airlines flights, Mail Motor Service (MMS) and Road Transport Network (RTN) have been utilised under the aegis of Department of Posts as mode of conveyance for exchange of Army mail bags. In addition, Helicopter Services wherever available under the aegis of formation Headquarters and Indian Air Force aircraft (IL) have also been utilised for the purpose based upon flight availability in northern sector.

During the journey of 75 glorious years of 1 CBPO, it has created many histories and Rajhans is flying with pride and will reach newer heights in the years to come. Hence, it is befitting to commemorate this rich history and devotional work by way of issuing a Commemorative Postage Stamp.

Department of Posts is honouring APS Corps by issuing Commemorative Postage Stamp on 75 years of 1 Central Base Post Office & salutes its immense contribution to Armed Forces seamless mail communication.

Credits:

Stamp /FDC/Brochure	:	Shri Brahm Prakash
Cancellation Cachet	:	Smt Nenu Gupta
Text	:	Based on information received from the proponent.

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
Department of Posts



1 केन्द्रीय बेस डाकघर के 75 वर्ष

75 Years of 1 Central Base Post Office

विवरणिका BROCHURE

1 केन्द्रीय बेस डाकघर के 75 वर्ष

1 सीबीपीओ (56 एपीओ) की गाथा 1947 में आरंभ हुई जब पूर्वी पंजाब की सीमा पर कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने और शरणार्थी प्रबंधन में सहायता करने के लिए सैनिकों को भेजा गया, उस समय सेना ने विशेष डाक व्यवस्था की आवश्यकता को महसूस किया गया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद वर्ष 1947 में इवाकुनी, जापान से 56 एपीओ वापिस आए, जिसने एक केन्द्र का निर्माण किया, जो बाद में 1 केन्द्रीय बेस डाकघर (सीबीपीओ) के नाम से जाना गया और नई दिल्ली में इसने कार्य करना आरंभ कर दिया।

1 सीबीपीओ उत्तरी, पश्चिमी, दक्षिण–पश्चिमी, केन्द्रीय और दक्षिणी कमान में फैले 259 एफपीओ/एसडीओ के लिए प्रधान डाकघर और डाक व एडीएस मेल के हब के रूप में कार्य कर रहा है। यह यूनिट बेस सेन्सरशिप को भी सुनिश्चित करती है। उत्तरी एवं पश्चिमी सीमाओं पर तैनात सेना के प्रचालन संबंधी नियंत्रण के तहत कार्यरत अर्ध सैनिक बलों को भी यह सेवा प्रदान करता हैं। यह पूर्वी वायु कमान को छोड़कर अन्य सभी वायु कमानों और समस्त नौसेना कमान को भी सेवा प्रदान करता है। यह संयुक्त राष्ट्र शांति सुरक्षा बलों में कार्यरत भारतीय दलों को पांच विदेशी डाकघरों के माध्यम से सेवा प्रदान करता है।

24 अक्टूबर, 1947 को इस एपीओ ने नई दिल्ली 56 एपीओ के नाम से बेस छंटाई कार्यालय के रूप में कार्य करना प्रारंभ किया था। पंजाब और जम्मू एवं कश्मीर में संचालित सभी विदेशी डाकघर डाक खातों के रखरखाव के साथ–साथ उनकी डाक की प्राप्ति एवं प्रेषण इन्ही पर आधारित था। 1948 के शुरूआती दौर में आरंभ में जोड़े जाने वाले शब्द ''नई दिल्ली'' को 56 बेस डाकघर से हटा दिया गया। कोड पता ''सी/ओ 56 एपीओ'' भी संवेदनशील क्षेत्रों में तैनात बलों के लिए सुरक्षित पते के रूप में उपयोग किया जाने लगा और इसे मेल की प्राप्ति और प्रेषण के लिए नोडल केन्द्र के रूप में प्रयोग किया गया।

मई, 1960 में पूर्वी कमान के विदेशी डाकघरों को बेस डाक सेवाएं मुहैया कराने के लिए कलकत्ता में एक अन्य केन्द्रीय बेस डाकघर खोला गया, उस समय 56 बेस डाकघर का नाम बदलकर 1 केन्द्रीय बेस डाकघर कर दिया गया। फरवरी, 1977 में 1 सीबीपीओ को उसके महत्वपूर्ण स्थान राव तुला राम मार्ग पर स्थानांतरित कर दिया गया, जिसका क्षेत्रफल 48 एकड़ था।1 फरवरी, 1987 को आर्मी मुख्यालय एसडीएस इकाई का 1 सीबीपीओ में विलय हो गया। सितंबर, 1973 में 1 पोस्टल ट्रैसिगं सेक्शन का 1 सीबीपीओ में विलय कर दिया गया। 01 जनवरी, 1989 से इस डाकघर का नाम बदलकर रिर्टन लेटर ऑफिस (आरएलओ) कर दिया गया। 18 जुलाई, 1970 से फिलैटली ब्यूरों ने सीबीपीओ के एक भाग के रूप में कार्य करना प्रारंभ कर दिया।

1 नवंबर, 1966 से 1 सीबीपीओ ने एफपीओ के माध्यम से समाचार पत्रों एवं पत्र–पत्रिकाओं को जम्मू एवं कश्मीर में तैनात बलों तक पहुंचाने की जिम्मेदारी ली। यह कार्य लाभ हानि रहित था। 1 अप्रैल, 1967 से यह सुविधा पूर्वी कमान के लिए भी उपलब्ध करवा दी गई।

यूनिटों के स्थान की गोपनीयता बनाए रखने के लिए पते के सुरक्षित रूप का ही उपयोग किया जाता है। यूनिट और स्टेशनों की पहचान विशिष्ट पिनकोड द्वारा की जाती है। भारतीय डाक की पिनकोड प्रणाली में, पिन ब्लॉक ''9'' एपीएस को दिया गया है। 56 एपीओ/1 सीबीपीओ इस कार्यप्रणाली का केन्द्र बिन्दु है।

कोविड–19 महामारी के दौरान जब देशभर में प्रतिबंध लगा दिए गए, उस समय 1 सीबीपीओ ने सभी एहतियाती उपायों को अपनाते हुए डाक आपात योजना क्रियान्वित की और डाक का नियमित आदान–प्रदान जारी रखा। फॉर्मेशन मुख्यालय (सेना) द्वारा जिस समय कोविड महामारी के संबंध में दिशा–निर्देश जारी किए गए थे 1 सीबीपीओ, सेना में मेल प्रचालन का हब होने के परिणामस्वरूप, ने सभी विकल्पों का पता लगाते हुए हर संभव प्रयास किए।

हवाई एवं रेल सेवाओं के बंद हो जाने के परिणामस्वरूप डाक को लाने–ले जाने के लिए केवल एक सड़क नेटवर्क माध्यम (केवल कुछ कार्गो उड़ाने और पार्सल ट्रेने चल रही थी) ही बचा था। नोडल फील्ड डाकघरों के साथ डाक थैलों के आदान–प्रदान के लिए सेना के वाहनों एवं कुरियर को अनिवार्य ड्यूटी के तहत लाने हेतु 1 सीबीपीओ द्वारा डाक आपात योजना को सक्रिय कर दी गई थी। डाक विभाग के संरक्षण में ब्लू डार्ट कार्गो उड़ाने/एयर इंडिया/निजी एयरलाइंस उड़ाने, मेल मोटर सर्विस (एमएमएस) की सेवाएं और सड़क परिवहन नेटवर्क (आरटीएन) को सेना के डाक थैलों को लाने–ले जाने के लिए परिवहन के साधन के रूप में उपयोग किया गया। इसके अतिरिक्त, फॉर्मेशन मुख्यालय और भारतीय वायु सेना वायुयान (आईएल) के संरक्षण में इस उद्देश्य के लिए हेलीकॉप्टर सेवाओं, जहां भी उपलब्ध रही, का उपयोग किया गया। ये हेलीकॉप्टर सेवाएं उत्तरी सेक्टर में उड़ानों की उपलब्धता पर निर्भर करती थी।

1 सीबीपीओ के 75 गौरवशाली वर्षों की यात्रा के दौरान, 1 सीबीपीओ ने कई इतिहास रचे हैं और राजहंस गर्व के साथ उड़ रहा है तथा आने वाले वर्षों में यह नई ऊंचाइयों तक पहुंचेगा। इस प्रकार से 1 सीबीपीओ के संबंध में स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए इसके समृद्ध इतिहास और निष्ठापूर्ण कार्य को याद करना यथोचित होगा।

डाक विभाग, 1 केन्द्रीय बेस डाकघर के 75 वर्ष पूर्ण होने पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए एपीएस कोर को सम्मानित कर रहा है। साथ ही सशस्त्र बलों के लिए निरंतर डाक संप्रेषण में 1 केन्द्रीय बेस डाकघर के 75 वर्ष के महत्वपूर्ण योगदान के लिए इनका अभिवादन करता है।

आभार :

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका : श्री ब्रह्म प्रकाश

विरूपण कैश : श्रीमती नीनू गुप्ता

मूलपाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री पर आधारित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्य	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रित डाक टिकटें	: 202000 प्रत्येक
Stamps Printed	: 202000 each
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00